अगाध विद्वता और प्रतिभा से प्रभावित होकर संपूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में संचालित तत्वगोष्ठियों और आध्यात्मिक मण्डलियों में चर्चित गूढ़तम शंकायें समाधानार्थ जयपुर भेजी जाती थीं और जयपुर से पंडितजी द्वारा समाधान पाकर तत्व-जिज्ञासु समाज अपने को कृतार्थ मानता था। साधर्मी भाई ब्र. रायमल ने अपनी "जीवन-पत्रिका" में तत्कालीन जयपुर की धार्मिक स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है—

महापंडित टोडरमल

⊙ डा० हुकमचन्द भारिल्ल

डा. गौतम के शब्दों में "जैन हिन्दी गद्यकारों में टोडरमलजी का स्थान बहुत ऊँचा है। उन्होंने टीकाओं और स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में दोनों प्रकार से गद्य-निर्माण का विराट उद्योग किया है। टोडरमलजी की रचनाओं के सूक्ष्मानुशीलन से पता चलता है कि वे आध्यात्म और जैन धर्म के ही वेत्ता न थे, अपितु व्याकरण, दर्शन, साहित्य और सिद्धान्त के ज्ञाता थे। भाषा पर भी इनका अच्छा अधिकार था।"

ईसवी की अठारहवीं शती के अन्तिम दिनों में राजस्थान का गुलाबी नगर जयपुर जैनियों की काशी बन रहा था। आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी की "तहाँ निरन्तर हजारों पुरुष स्त्री देवलोक की सी नांई चैत्याले आय महापुण्य उपारजै, दीर्घकाल का संच्या पाप ताका क्षय करै। सो पचास भाई पूजा करने वारे पाईए, सौ पचास भाषा शास्त्र बांचने वारे पाईए, दस बीस संस्कृत बांचने वारे पाईए, सौ पचास जनें चरचा करने वारे पाईए और नित्यान का सभा के शास्त्र बांचने का व्याख्यान विषै पांच सै सात सै पुरुष तीन सै चारि सै स्त्रीजन, सब मिली हजार बारा सै पुरुष स्त्री शास्त्र का श्रवण करै बीस तीस वायां शास्त्राभ्यास करै, देश देश का प्रश्न इहाँ आवै तिनका समाधान होय उहां पहुंचे, इत्यादि अद्भुत महिमा चतुर्थकालवत या नग्र विषै जिनधर्म की प्रवर्ति पाईए है।"[2]

1. हिन्दी गद्य का विकास : डा० प्रेमप्रकाश गौतम, अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर कानपुर, पृ० 188।
2. पंडित टोडरमल, व्यक्तित्व और कृतृत्व, परिशिष्ट 1, प्रकाशक : पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4 बापूनगर, जयपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यद्यपि सरस्वती माँ के वरद पुत्र का जीवन आध्यात्मिक साधनाओं से ओतप्रोत है, तथापि साहित्यिक व सामाजिक क्षेत्र में भी उनका प्रदेय कम नहीं है। आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी उन दार्शनिक साहित्यकारों एवं क्रान्तिकारियों में से हैं जिन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र में आई हुई विकृतियों का सार्थक व समर्थ खण्डन ही नहीं किया, वरन् उन्हें जड़ से उखाड़ फेंका। उन्होंने तत्कालीन प्रचलित साहित्य भाषा ब्रज में दार्शनिक विषयों का विवेचक ऐसा गद्य प्रस्तुत किया जो उनके पूर्व विरल है।

पंडितजी का समय ईस्वी का अठारहवीं सदी का मध्यकाल है। वह संक्रान्तिकालीन युग था। उस समय राजनीति में अस्थिरता सम्प्रदायों में तनाव, साहित्य में शृंगार, धर्म के क्षेत्र में रूढ़िवाद, आर्थिक जीवन में विषमता एवं सामाजिक जीवन में आडंबर, ये सब अपनी चरम सीमा पर थे। उन सब से पडितजी को संघर्ष करना था जो उन्होंने डटकर किया और प्राणों की बाजी लगाकर किया।

पंडित टोडरमलजी गम्भीर प्रकृति के आध्यात्मिक महापुरुष थे। वे स्वभाव से सरल, संसार से उदास, धुन के धनी, निराभिमानी, विवेकी अध्ययनशील, प्रतिभावान, बाह्याडंबर विरोधी, दृढ़ श्रद्धावी, क्रान्तिकारी, सिद्धान्तों की कीमत पर कभी न झुकनेवाले, आत्मानुभवी, लोकप्रिय प्रवचनकार, सिद्धान्त ग्रन्थों के सफल टीकाकार एवं परोपकारी महामानव थे।

वे विनम्र दृढ़श्रद्धानी विद्वान एवं सरल स्वभावी थे। वे प्रामाणिक महापुरुष थे। तत्कालीन आध्यात्मिक समाज में तत्वज्ञान संबंधी प्रकरणों में उनके कथन प्रमाण के तौर पर प्रस्तुत किए जाते थे। वे लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवक्ता थे। धार्मिक उत्सवों में जनता की अधिक से-अधिक उपस्थिति के लिए उनके नाम का प्रयोग आकर्षण के रूप में किया जाता था। गृहस्थ होने पर भी उनकी वृत्ति साधुता की प्रतीक थी।

पंडितजी के पिता का नाम जोगीदासजी एवं माता का नाम रम्भादेवी था। वे जाति से खण्डेलवाल थे और गोत्र था गोदीका, जिसे भौंसा व बड़जात्या भी कहते हैं। उनके वंशज ढोलाका भी कहलाते थे। वे विवाहित थे पर उनकी पत्नि व ससुराल पक्षवालों का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। उनके दो पुत्र थे—हरीचन्द्र और गुमानीराम। गुमानीराम भी उनके समान उच्च कोटि के विद्वान और प्रभावक आध्यात्मिक प्रवक्ता थे। उनके पास बड़े-बड़े विद्वान भी तत्व का रहस्य समझने आते थे। पंडित देवीदास गोधा ने "सिद्धान्तसार संग्रह टीका प्रशस्ति" में इसका स्पष्ट उल्लेख किया है। पंडित टोडरमलजी की मृत्यु के उपरान्त वे पंडितजी द्वारा संचालित धार्मिक क्रान्ति के सूत्रधार रहे। उनके नाम से एक पंथ भी चला जो 'गुमान पंथ' के नाम से जाना जाता है।

पंडित टोडरमलजी की सामान्य शिक्षा जयपुर की एक आध्यात्मिक (तेरापथ) शैली में हुई, जिसका बाद में उन्होंने सफल संचालन भी किया। उनके पूर्व बाबा बंशीधर जी उक्त शैली के संचालक थे। पंडित टोडरमलजी गूढ़ तत्वों के तो स्वयंबुद्ध ज्ञाता थे। 'लब्धिसार' व "क्षपणासार" की संदृष्टियाँ आरम्भ करते हुए वे लिखते हैं "शास्त्रविषेलिख्या नाहीं और बतावने वाला मिल्या नाहीं"।

संस्कृत, प्राकृत, और हिन्दी के अतिरिक्त उन्हें कन्नड़ भाषा का भी ज्ञान था। मूल ग्रंथों को वे कन्नड़ लिपि में पढ़-लिख सकते थे। कन्नड़ भाषा और लिपि का ज्ञान एवं अभ्यास भी उन्होंने स्वयं किया। वे कन्नड़

---

3. इन्द्रध्वज विधान महोत्सव पत्रिका।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाषा के ग्रंथों पर व्याख्यान करते थे एवं उन्हें कन्नड़ लिपि में लिख भी लेते थे। ब्र. रायमल ने लिखा है—

"दक्षिण देश सूं पांच सात और ग्रन्थ ताड़पत्रांविषे कर्णाटी लिपि में लिख्या इहाँ पधारे हैं, ताकूं टोडरमलजी बाँचे है। वाका यथार्थ व्याख्यान करै है, वा कर्णाटी लिपि में लिखते हैं।

परम्परागत मान्यतानुसार उनकी आयु कुल 27 वर्ष कही जाती रही, परन्तु उनकी साहित्यिक साधना, ज्ञान व प्राप्त उल्लेखों को देखते हुए मेरा यह निश्चित मत है कि वे 47 वर्ष तक अवश्य जीवित रहे। इस सम्बन्ध में साधर्मी भाई ब्र. रायमल द्वारा लिखित चार्चा संग्रह ग्रन्थ की अलीगंज (एटा उ. प्र.) में प्राप्त हस्त-लिखित प्रति के पृष्ठ 173 का निम्नलिखित उल्लेख विशेष दृष्टव्य है –

"बहुरि बारा हजार त्रिलोकसारजी की टीका का बारा हजार मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ उनके शास्त्रों के अनुसरि और आत्मानुशासनजी की टीका हजार तीन यां तीनां ग्रन्थां की टीका भी टोडरमलजी सैंतालीस बरस की आयु पूर्ण करि परलोक विषे गमन की।"

उनकी मृत्यु तिथि विक्रम संवत् 1823-24 के लगभग निश्चित है, अतः उनका जन्म विक्रम सवत् 1776-77 में होना चाहिए।

पंडित बखतराम शाह के अनुसार कुछ मतांध लोगों द्वारा लगाये गए शिवपिण्डी के उखाड़ने के आरोप के सदर्भ में राजा द्वारा सभी श्रावकों को कैद कर लिया गया था और तेरापंथियों के गुरु महान धर्मात्मा, महापुरुष पंडित टोडरमलजी को मृत्यु दण्ड दिया गया था। दुष्टों के भड़काने में आकर राजा ने उन्हें मात्र प्राणदण्ड ही नहीं दिया बल्कि गंदगी में गड़वा दिया था।[4] यह भी कहा जाता है कि उन्हें हाथी के पैर के नीचे कुचलवा कर मारा गया था।[5]

पंडित टोडरमलजी आध्यात्मिक साधक थे। उन्होंने जैन दर्शन और सिद्धान्तों का गहन अध्ययन ही नहीं किया अपितु उसे तत्कालीन जनभाषा में लिखा भी है। उसमें उनका मुख्य उद्देश्य अपने दार्शनिक चिन्तन को जन-साधारण तक पहुँचाना था। पंडितजी ने प्राचीन जैन ग्रंथों की विस्तृत, गहन परन्तु सुबोध भाषा-टीकाएँ लिखीं। इन भाषा-टीकाओं में कई विषयों पर बहुत ही मौलिक विचार मिलते जो उनके स्वतंत्र चिन्तन के परिणाम थे। बाद में इन्हीं विचारों के आधार पर उन्होंने कतिपय मौलिक ग्रन्थों की रचना भी की। उनमें से सात तो टीकाग्रन्थ हैं और पाँच मौलिक रचनाएँ। उनकी रचनाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है :—

(1) मौलिक रचनाएँ (2) व्याख्यात्मक रचनाएँ।

मौलिक रचनाएँ गद्य और पद्य दोनों रूपों में हैं। गद्य रचनाएँ चार शैलियों में मिलती हैं :—

(क) वर्णनात्मक शैली, (ख) पत्रात्मक शैली, (ग) यन्त्र रचनात्मक (चार्ट) शैली, (घ) विवेचनात्मक शैली।

वर्णनात्मक शैली में समीसरण आदि का सरल भाषा में सीधा वर्णन है। पंडितजी के पास जिज्ञासु लोग दूर-दूर से अपनी शंकाएँ भेजते थे, उसके समाधान में वह जो कुछ लिखते थे, वह लेखन पत्रात्मक शैली के अन्तर्गत आता है। इसमें तर्क और अनुभूति का सुन्दर समन्वय है। इन पत्रों में एक पत्र बहुत महत्वपूर्ण है। सोलह पृष्ठीय यह पत्र 'रहस्यपूर्ण चिट्ठी' के नाम से

---

4. बुद्धि विलास : बखतराम साह, छन्द 1303, 1304।
5. (क) वीरवाणी : टोडरमल अंक पृ० 285, 286। (ख) हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड, पृ० 500।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रसिद्ध है। यंत्र रचनात्मक शैली में चार्टों द्वारा विषय को स्पष्ट किया है। अर्थ संदृष्टि अधिकार इसी प्रकार की रचना है। विवेचनात्मक शैली में सैद्धान्तिक विषयों को प्रश्नोत्तर पद्धति में विस्तृत विवेचन कर के युक्ति व उदाहरणों से स्पष्ट किया है। मोक्षमार्ग प्रकाशक इसी श्रेणी में आता है।

पद्यात्मक रचनाएँ दो रूपों में उपलब्ध हैं :
(1) भक्ति परक, (2) प्रशस्ति परक।

भक्तिपरक रचनाओं में गोम्मटसार पूजा एवं ग्रन्थों के आदि, मध्य और अन्त में मंगलाचरण के रूप में प्राप्त फुटकर पद्यात्मक रचनाएँ हैं। ग्रन्थों के अन्त में लिखी गई परिचयात्मक प्रशस्तियाँ प्रशस्तिपरक श्रेणी में आती हैं।

पंडित टोडरमलजी की व्याख्यात्मक टीकाएँ दो रूपों में पाई जाती हैं :—

1. संस्कृत ग्रन्थों की टीकाएँ।
2. प्राकृत ग्रन्थों की टीकाएँ।

संस्कृत ग्रन्थों की टीकाएँ आत्मानुशासन भाषा टीका और पुरुषार्थ सिद्धयुपाय भाषा टीका है। प्राकृत ग्रन्थों में गौम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, लब्धिसार-क्षपणासार और त्रिलोकसार हैं, जिनकी भाषा-टीकाएँ उन्होंने लिखी हैं।

गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड लब्धिसार और क्षपणसार की भाषा-टीकाएँ पंडित टोडरमलजी ने अलग-अलग बनाई थीं, परन्तु उन चारों टीकाओं को परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्धित एवं परस्पर एक का अध्ययन दूसरे के अध्ययन में सहायक जानकर उन्होंने उक्त चारों टीकाओं को मिलाकर एक कर दिया तथा उसका नाम "सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका" रख दिया।

'सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका' विवेचनात्मक गद्यशैली में लिखी गई है। प्रारम्भ में इकहत्तर पृष्ठ की पीठिका है। आज नवीन शैली में सम्पादित ग्रन्थों की भूमिका का बड़ा महत्व माना जाता है। शैली के क्षेत्र में दो सौ बीस वर्ष पूर्व लिखी गई सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका की पीठिका आधुनिक भूमिका का आरंभिक रूप है. उसमें हलकापन कहीं भी देखने को नहीं मिलता है। इसके पढ़ने से ग्रंथ का पूरा हार्द खुल जाता है एवं इस ग्रन्थ के पढ़ने में आनेवाली पाठक की समस्त कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। हिन्दी आत्मकथा साहित्य में जो महत्व महाकवि बनारसीदास के अर्द्ध कथानक को प्राप्त है, वही महत्व हिन्दी भूमिका साहित्य में 'सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका' की पीठिका का है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक पंडित टोडरमलजी का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का आधार कोई एक ग्रन्थ न होकर सम्पूर्ण जैन साहित्य है। यह सम्पूर्ण जैन साहित्य को अपने में समेट लेने का एक सार्थक प्रयत्न था, पर खेद है कि यह ग्रन्थराज पूर्ण न हो सका, अन्यथा यह कहने में संकोच न होता कि यदि सम्पूर्ण जैन वाङ्मय कहीं एक जगह सरल, सुबोध और जनभाषा में देखना हो तो मोक्षमार्ग प्रकाशक को देख लीजिए। अपूर्ण होने पर भी यह अपनी अपूर्वता के लिए प्रसिद्ध है। यह एक अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है जिसके कई संस्करण निकल चुके हैं[6] एवं खड़ी बोली में

---

6. (क) बाबू ज्ञानचन्दजी जैन लाहौर, (वि० सं० 1954)।
   (ख) जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई (सन् 1911)।
   (ग) बाबू पन्नालालजी चौधरी, वाराणसी (वी० नि० सं० 2451)।
   (घ) अनन्त कीर्ति ग्रन्थमाला, बम्बई (वी० नि० सं० 2463)।
   (ङ) सस्ती ग्रन्थमाला, दिल्ली
   (च) वही।
   (छ) वही।
   (ज) वही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके अनुवाद भी कई बार प्रकाशित हो चुके हैं। यह उर्दू में भी छप चुका है।[8] मराठी और गुजराती में इसके अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।[9] अभी तक सब कुल मिलाकर इसकी 51200 प्रतियाँ छप चुकी हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष के दिगम्बर जैन मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों में इस ग्रन्थराज की हजारों हस्तलिखित प्रतियाँ पाई जाती हैं। समूचे समाज में यह स्वाध्याय और प्रवचन का लोकप्रिय ग्रन्थ है। आज भी पंडित टोडरमलजी दिगम्बर जैन समाज में सर्वाधिक पढ़े जाने-वाले विद्वान हैं। मोक्षमार्ग प्रकाशक की मूल प्रति भी उपलब्ध है।[10] एवं उसके फोटोप्रिंट करा लिए गए हैं, जो जयपुर[11], बम्बई[12], दिल्ली[13] और सोनगढ़[14] में सुरक्षित हैं। इस पर स्वतंत्र प्रवचनात्मक व्याख्याएँ भी मिलती हैं।[15]

यह ग्रन्थ विवेचनात्मक गद्यशैली में लिखा गया है। प्रश्नोत्तरों द्वारा विषय को बहुत गहराई से स्पष्ट किया गया है। इसका प्रतिपाद्य एक गम्भीर विषय है, पर जिस विषय को उठाया गया है उसके सम्बन्ध में उठनेवाली प्रत्येक शंका का समाधान प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। प्रतिपादन शैली में मनो-वैज्ञानिकता एवं मौलिकता पाई जाती है। प्रथम शंका के समाधान में द्वितीय शंका की उत्थानिका निहित रहती हैं। ग्रन्थ को पढ़ते समय पाठक के हृदय में जो प्रश्न उपस्थित होता है उसे हम अगली पंक्ति में लिखा पाते हैं। ग्रन्थ पढ़ते समय पाठक को आगे पढ़ने की उत्सुकता बराबर बनी रहती है।

वाक्य रचना संक्षिप्त और विषय प्रतिपादन शैली तार्किक एवं गम्भीर है। व्यर्थ का विस्तार उसमें नहीं है पर विस्तार के संकोच में कोई विषय अस्पष्ट नहीं रहा है। लेखक विषय का यथोचित विवेचन करता हुआ आगे बढ़ने के लिए सर्वत्र ही आतुर रहा है। जहाँ कहीं भी विषय का विस्तार हुआ है वहाँ उत्तरोत्तर नवीनता आती गई है। वह विषय विस्तार सांगोपांग विषय विवेचना की प्रेरणा से ही हुआ है। जिस बिषय

---

7. (क) अ० भा० दिगम्बर जैन संघ, मथुरा (वी० नि० सं० 2005)।
   (ख) श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ (वी० नि० सं० 2023)।
   (ग) ,, ,, ,, (वि० सं.० 2026)।
   (घ) ,, ,, ,, (वि० सं० 2030)।
8. दाताराम चेरिटेबिल ट्रस्ट, दरीबाकलां, दिल्ली (वि० सं० 2027)।
9. (क) श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़
   (ख) महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा।
10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, दीवान अमीचन्दजी, घीवालों का रास्ता, जयपुर।
11. वही, जयपुर।
12. श्री दिगम्बर जैन सीमंधर जिनालय, जवेरी बाजार, बम्बई।
13. श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, धर्मपुरा, देहली।
14. श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़
15. आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा किए गये प्रवचन, मोक्षमार्ग प्रकाशक की किरण नाम से दो भागों में श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ से हिन्दी व गुजराती भाषा में कई बार प्रकाशित हो चुके हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को उन्होंने छुआ उसमें "क्यों" का प्रश्नवाचक समाप्त हो गया है। शैली ऐसी अद्भुत है कि एक अपरिचित विषय भी सहज हृदयंगम हो जाता है।

पंडितजी का सबसे बड़ा प्रदेय यह है कि उन्होंने संस्कृत, प्राकृत में निबन्ध आध्यात्मिक तत्वज्ञान को भाषा-गद्य के माध्यम से व्यक्त किया और तत्व विवेचन में एक नई दृष्टि दी। यह नवीनता उनकी क्रान्तिकारी दृष्टि में है।

टीकाकार होते हुए भी पंडितजी ने गद्यशैली का निर्माण किया है। डॉ. गौतम ने उन्हें गद्य निर्माता स्वीकार किया है।[16] उनकी शैली दृष्टान्तयुक्त प्रश्नोत्तरमयी तथा सुगम है। वे ऐसी शैली अपनाते हैं जो न तो एकदम शास्त्रीय है और न आध्यात्मिक सिद्धियों और चमत्कारों से बोझिल। उनकी इस शैली का सर्वोत्तम निर्वाह मोक्षमार्ग प्रकाशक में है। तत्कालीन स्थिति में गद्य को आध्यात्मिक चिन्तन का माध्यम बनाना बहुत सूझबूझ और श्रम का कार्य था। उनकी शैली में उनके चिंतक का चरित्र और तर्क का स्वभाव स्पष्ट झलकता है। एक आध्यात्मिक लेखक होते हुए भी उनकी गद्यशैली में व्यक्तित्व का प्रक्षेप उनकी मौलिक विशेषता हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पंडित टोडरमल केवल न टीकाकार थे बल्कि आध्यात्म के मौलिक विचारक भी थे। उनका यह चिन्तन समाज की तत्कालीन परिस्थितियों और बढ़ते हुए आध्यात्मिक शिथिलाचार के सन्दर्भ में एकदम सटीक है।

लोकभाषा काव्यशैली में 'रामचरित मानस' लिखकर महाकवि तुलसीदास ने जो काम किया, वही काम उनके दो सौ वर्ष बाद गद्य में जिन आध्यात्म को लेकर पंडित टोडरमलजी ने किया।

जगत के सभी भौतिक द्वन्द्वों से दूर रहनेवाले निरन्तर आत्मसाधना व साहित्य-साधनारत इस महामानव को जीवन की मध्यवय में ही साम्प्रदायिक विद्वेष का शिकार होकर जीवन से हाथ धोना पड़ा।

इनके व्यक्तित्व और कतृत्व के सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए लेखक के शोध प्रबन्ध "पंडितटोडरमल : व्यक्तित्व और कतृत्व[17] का अध्ययन करना चाहिये। इनकी भाषा का नमूना इस प्रकार है :—

"तातैं बहुर कहा कहिए" जैसे रागादि मिटावने का श्रद्धान होय सो ही सम्यग्दर्शन है। बहुरि जैसे रागादि मिटवाने का जानना होय सोही सम्यग्ज्ञान है। बहुरि जैसे रागादि मिटे सो ही सम्यक्चारित्र है। ऐसा ही मोक्षमार्ग मानना योग्य है।[18]

□ □

16. प्रकाशक : पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-41
17. मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ-313।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org